आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन।
सुध तो नहीं कछू साथ को, पर तो भी अपने सजन।। ६ ।।

जो भेद वाणी के तुझे खुले, वह अपने सुन्दरसाथ को बताना। सुन्दरसाथ को माया में सुध नहीं है फिर भी वह तो अपने साथी हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३४१ ।।

मेरे साथ सोहागी रे, पिउसों क्यों न करो पेहेचान।
पेहेले चले पेहेचान बिना, फेर आए सो अपनी जान।। १ ।।

हे मेरे सुहागी (सौभाग्यशाली) सुन्दरसाथ ! तुम पिया की पहचान क्यों नहीं करते? पहले भी तुम्हारी नासमझी के कारण वह चले गए थे। अब दुबारा अपना साथ समझकर आए हैं।

सोई पिउ सोई बातड़ी, फेर सोई करे पुकार।
कारन अपने पिउ को, आंखों आवे जलधार।। २ ।।

यह वही पिया हैं और वही चर्चा है। उसी तरह सोए हुए को जगाते हैं। हमारे वास्ते वह अपनी आंखों में आसूं भर-भर कर रोते हैं।

सोई नसीहत देत सजन, खैंचत तरफ वतन।
पिउ पुकारें बेर दूसरी, अब क्यों होंए पीछे आपन।। ३ ।।

धनी वतन (धाम) की तरफ चलने के लिए वैसा ही सिखापन देते हैं। दूसरी बार आकर पुकार कर रहे हैं। अब हम पीछे क्यों रहें?

सोई कूकां करे पेहेले की, सो क्यों न समझो बात।
न तो दिन उजाले खरे दो पोहोरे, अब हो जासी रात।। ४ ।।

धनी पहले की तरह से ही जोश में चर्चा करते हैं। इस बात को तुम क्यों नहीं समझते? अगर अब भी नहीं समझे तो दिन के दोपहर जैसे उजाले में रात हो जाएगी।

फेर पटकोगे हाथड़े, और छाती देओगे घाउ।
चल जासी पिउ हाथ से, फेर न पाओगे दाउ।। ५ ।।

फिर हाथ पटकोगे और छाती पीटोगे जब पिया चले जाएंगे। फिर ऐसा समय नहीं पाओगे।

विलख विलख कहे वचन, रोए रोए किए बयान।
प्रेम करे अति प्रीतसों, पर साथ को सुध न सान।। ६ ।।

धनी ने बिलख-बिलखकर, रो-रोकर वाणी से समझाया और रो-रोकर घर की बातें बताईं। सुन्दरसाथ से बड़ा प्रेम भी किया, फिर भी साथ को सुध नहीं आई।

माया देखी बीच पैठ के, पिउ के उजाले तुम।
विध विध खेल देखावने, पिउ ल्याए तारतम।। ७ ।।

तुमने प्रीतम के ज्ञान के उजाले में माया को माया के संसार में बैठकर देखा। तुमको तरह-तरह से खेल दिखाने के लिए धनी तारतम ज्ञान लाए हैं।

Nijanand App

ए जो मांगी तुम माया, सो देखे तीन संसार।
अब साथ पिउ संग चलिए, ज्यों पिउ पावें करार।। ८ ।।

तुमने परमधाम में माया का खेल मांगा था। वह तुमने तीन लीलाओं में देखा। अब हे साथजी ! धनी के साथ चलें, जिससे धनी को सुख मिले।

पिउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप।
सो नजरों न आवे प्रेम बिना, बिना मेहेर या मिलाप।। ९ ।।

धनी ने हमारे लिए माया में पांच बार तन धारण किया है। वह प्रेम की नजर के बिना नहीं दिखेगा और न ही उनसे मिलाप होगा और न उनकी मेहर होगी।

भले देखो तुम आकार को, पर देखो अंदर का तेज।
धनीधाम के साथसों, कैसा करत हैं हेज।। १० ।।

भले ही तुम उनके शरीर को देखो। पर उनके अन्दर ज्ञान का प्रकाश भी देखो। यह भी देखो कि वह सुन्दरसाथ से कितना प्यार करते हैं।

अब कैसी विध करूं तुमसों, कछू ना पेहेचाने सजन।
सोर हुआ एता तुम पर, क्यों आवे नींद आंखन।। ११ ।।

अब तुम्हारे साथ कौन सा बर्ताव (सुलूक) करूं? तुमने धनी को नहीं पहचाना। तुम्हारे सिर पर इतनी ज्ञान की चर्चा हुई और अभी भी तुम्हारी आंखें नहीं खुलीं।

ना गई नींद अंदर की, क्यों एते बान सहे।
जाग चलो संग पिउ के, पीछे करोगे कहा रहे।। १२ ।।

तुम्हारे अन्दर के संशय अभी तक नहीं मिटे। तुमने इतने खण्डनी के वचनों को सहन कर लिया। अब जागृत होकर पिया के साथ चलो। पीछे यहां रहकर क्या करोगे?

तुमें धनी बिना कौन दूसरा, ए उड़ावे अंधेर।
तुम देखो साथ विचार के, जिन भूलो इन बेर।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! इन धनी के बिना तुम्हारा अज्ञान कौन मिटाएगा? यह तुम सोचकर देखो। अब भूलो मत।

एक बेर भूले आदमी, ताए और बेर आवे बुध।
ए चोटां सहियां सिर एतियां, तो भी ना हुई तुमें सुध।। १४ ।।

एक बार आदमी भूल करता है तो दूसरी बार वह सावचेत हो जाता है। तुमने खण्डनी की चोट इतनी सह ली, फिर भी तुम्हें सुध नहीं आई।

अब ढील ना कीजे एक पल, इत नाहीं बैठनका लाग।
एक पलक के कोटमें हिसे, हो जासी बड़ा अभाग।। १५ ।।

अब एक पल की भी ढील मत करो। यहां बैठने का समय नहीं है। एक पल के करोड़वें हिस्से में विनाश हो जाएगा।

Nijanand App

कहूं गुसा कर वचन, सो ना वले मेरी जुबांए।
पर इत नफा क्या होएसी, तुम रहे माया लगाए।। १६ ।।

गुस्सा करके कहूं, यह अच्छा नहीं लगता। पर तुम यहां माया में रहकर लाभ क्या लोगे?

टेढ़े सुकन तुमे कहूं, सो काट करूं जुबां दूर।
पर इन मायाका तुमको, कहा होसी रोसन नूर।। १७ ।।

हे साथजी ! मैं तुम्हें लाड़ से समझाता हूं तो माया तुम्हें समझने नहीं देती। इसलिए तुम्हें खण्डनी के वचन कहने पड़ते हैं। अन्यथा मेरी जबान से कठोर वचन निकलें तो उसे काटकर दूर कर दूं।

ना पेहेचाने इन उजाले, ए दोए साख पूरन।
पीछे पिउ आगे वतन में, क्यों होसी मुख रोसन।। १८ ।।

इस तारतम वाणी के उजाले में दो-दो बार धनी के आने और गवाहियां देने पर भी तुमने धनी को नहीं पहचाना तो पीछे घर (परमधाम) में मुंह ऊंचा करके कैसे देखोगे?

पेहेले नजरों देखते, गयो अवसर टूटी आस।
निकस गए जब हाथ से, तब आपन भए निरास।। १९ ।।

पहले देखते-देखते मौका हाथ से निकल गया और आशा टूट गई थी। जब धनी हाथ से चले गए थे और हम निराश हो गए थे।

ए ठौर ऐसा विखम, नास होए मिने खिन।
स्याने हो तुम साथजी, सब चतुर वचिखिन।। २० ।।

ये ठिकाना (स्थान) बड़ा कठिन है और एक क्षण में नाश होने वाला है। हे साथजी ! तुम समझदार हो, चतुर हो और प्रवीण हो।

तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विखे रस लाग।
पांउ पकड़ कहे इंद्रावती, उठ खड़े रहो जाग।। २१ ।।

हे मेरे समझदार साथजी ! इस संसार के जहरीले रसों में मन न लगाओ। श्री इन्द्रावतीजी पांव पकड़कर कहती हैं कि इसे छोड़कर खड़े हो जाओ और जाग जाओ।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ३६२ ॥

श्री धनीजी के लागूं पाए, मेरे पिउजी फेरा सुफल हो जाए।
ज्यों पिउ ओलखाए मेरे पिउजी, सुनियो हो प्यारे मेरी विनती।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनीजी के चरणों में प्रणाम करती हूं जिससे मेरा यहां आना सफल हो जाए। पहले मैंने धनी को नहीं पहचाना था। अब पहचान हो जाए, यह मेरी विनती सुनो।

मैं पेहेले ना पेहेचाने श्री राज, मोहे आड़ी भई माया की लाज।
भवसागर की किने पाई न किनार, सो तुम सेहेजे उतारे पार।। २ ।।

पहले मुझे माया की लज्जा (शर्म) थी। मैं पहचान न सकी। इस भवसागर के किनारे (पार) को किसी ने नहीं पाया। आपने बड़ी आसानी से हमें इससे पार उतार दिया है।

Nijanand App